बनास जन

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

आवरण : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 150 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–190 रुपये
300 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–340 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सएप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और सचदेवा आफसेट प्रिंटर्स, बी-39, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		5
स्मृति		
भेजा तो था खुदा ने बशारत के वास्ते लेकिन बशीर ने जो किया कुछ अलग है वो	शिरीष कुमार मौर्य	7
प्रसंग		
सामाजिक न्याय के पुरोधा जोतिबा फुले और भारतीय समाज	नामदेव	13
स्त्री यथार्थ और स्त्री आख्यान : भारतीय उपन्यास और कृष्णा सोबती	अनामिका	21
विरासत		
ऐसा ही है मेरा जीवन *चोखामेला के अभंगों का हिंदी भाव रूपांतर*	माधव हाड़ा	42
देश और उपन्यास		
पथेर दाबी : शरत्‌चन्द्र चट्‌टोपाध्याय ऊबड़-खाबड़ रास्ता और इसके निराले दावेदार!	रेणु व्यास	49
कविताएँ		
अदनान कफ़ील दरवेश		66
देवेश पथ सारिया		69
राही डूमरचीर		72
मनोज कुमार झा		76
विवेक चतुर्वेदी		79
अम्बिकादत्त		82
कहानियाँ		
सलाम-सलाम-सलाम	राहुल श्रीवास्तव	84
घर सुन रहा है...	सोनू यशराज	91
तुम्हें पहचानने की कोशिश कर रही हूँ	सविता पाठक	97
यह कोई विकल्प नहीं	विजयशंकर चतुर्वेदी	106
उड़ती चिड़िया के पर	हरि भटनागर	118

साहित्यिकी

आनंदमठ की स्त्रियाँ : राष्ट्र-भक्ति और चेतना	मुस्कान गिरि	128
भाषा और उपनिवेश के भीतर : उत्तर भारत के घुमंतू समुदाय और उनका स्मृतिकोश	रमाशंकर सिंह	138
मुस्लिम समाज की व्यथा-कथा	विनोद तिवारी	145
कथाकार राजी सेठ का अवदान	रीता सिन्हा	154
विमर्शों के बीच पुल : उत्तर-विमर्श	शम्भुनाथ	164

कथेतर

डोंगरी के उस पार, बादल सरकार	सपन सारण	173
कैपिटल सुपरफास्ट खटारा	शिरीष खरे	181
हम जानते हैं आप कहाँ से बोल रहे हैं!	संजीव कुमार	187
रंग, उदयपुर और मैं	हेमन्त द्विवेदी	191
घर तोड़ने और परिवार छोड़ने के बदले, मैंने अपने रास्ते स्वयं बनाए हैं	बजरंग बिहारी तिवारी	193
लाल पद्मधर की तरह ज़िंदा कौन शहीद!	सुधीर विद्यार्थी	200
अंजीर का पेड़ और बूढ़ा	अशोक अग्रवाल	204
सम्मान	इब्बार रब्बी	218

कथेतर चर्चा

अनिच्चवत संखारा : संवाद, मृत्यु और मनुष्य	मयंक मीना	221
यहाँ की सुबह निराली, यहाँ की शाम नई	गणपत तेली	227
वीर माँओं का अनकहा संघर्ष	रेनू त्रिपाठी	230
विभाजन, निरन्तरता और तीसरी पीढ़ी	प्रीति कुमारी	234

कविता की बात

हरीश भादानी की कविता	सदाशिव श्रोत्रिय	238

सिनेमा

फिल्म निर्देशक की आदृष्टि और संवेदना	सुभाष शर्मा	249
दृश्य माध्यम में बदलता मातृत्व-संघर्ष, चुनौतियाँ और प्रतिरोध	स्मृति सुमन	263

समीक्षा

नई दुनिया के स्वप्न का आख्यान	आयुष्मान पटेल	276
सभ्यता संघर्ष की दास्तान : राग पूरबी	शिव प्रकाश त्रिपाठी	279
केदारनाथ सिंह की कविता में जड़ों का संगीत	अर्जुन कुमार	284
आजकल क्या कर रहे हो शेखर?	ममता कंवर बारहठ	287
देवदासी उवाच....		
जिद और जिजीविषा का आख्यान	रणजीत साहा	295

अपनी बात

बाजार ने धीरे-धीरे उन जगहों पर भी अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है जहाँ उसके होने की कल्पना भी कठिन थी। साहित्य ऐसी ही एक जगह है। साहित्य मुनाफे की जगह नहीं है बल्कि इसकी बुनियाद में मुनाफे के विरुद्ध रहने की प्रतिज्ञा है। बाजार का काम बिना झूठ के नहीं चल सकता और साहित्य सच की नींव पर ही टिकता है। ऐसा नहीं है कि भूमंडलीकरण और मीडिया विस्फोट ने ऐसा वातावरण बना दिया है जिसमें बाजार साहित्य पर निर्णायक विजय के लिए उद्धत होता दिखाई दे रहा है, यह भी भूला नहीं जा सकता कि साहित्य पर अंकुश लगना सत्ता की पुरानी आकांक्षा है। देखते-देखते यह होता गया है कि बाजार ने भूमंडलीकरण और मीडिया विस्फोट के सहारे लेखक को इस समझ के लिए मजबूर किया है कि उसकी पृथक कोई सत्ता नहीं बल्कि वह इस समूचे तंत्र का एक साधारण योगदानकर्ता है। सोशल मीडिया पर लेखक का अपनी कृतियों के विपणन के लिए वाचाल प्रदर्शन इसकी निशानी ही तो है।

बाजार के इस अभियान का अगला पड़ाव है लेखक को उत्पाद के रूप में विकसित करना और उसे अपने अवमूल्यन को समझने भी न देना। पिछले कुछ अरसे से इस प्रक्रिया को एक खास गतिविधि में देखा जा सकता है, यह गतिविधि है कृति से कृतिकार को बड़ा बनाकर प्रस्तुत करना। साहित्य की मूल प्रतिज्ञाओं में से एक को शमशेर की इस काव्य पंक्ति ने अत्यंत सुंदर ढंग से बताया है, बात बोलेगी हम नहीं। बाजार कहता है हम बोलें, बात का क्या है? बल्कि हम ही बोलते रहें। इस गतिविधि का एक भौंडा रूप इधर आ रही पुस्तकों के आवरण पर कृति के शीर्षक से बड़े आकार में कृतिकार का नाम छापने की जिद में देखा जा सकता है। यह बात भूलने के विरुद्ध है कि हमारे देश में (बल्कि समूची मानवीय संस्कृति में भी) हमेशा कृति को अधिक महत्त्व दिए जाने की परम्परा है। कितनी ऐसी महान कृतियाँ हैं जिनके रचनाकार का नाम तक हम नहीं जानते और हर महान रचनाकार की हर रचना को वही सम्मान नहीं मिलता जो उसकी सबसे महान रचना को मिलता है।

इस बात के मूल में मनुष्य या रचनाकार की अप्रतिष्ठा नहीं है बल्कि रचना को मनुष्य से भी अधिक मूल्यवान मानने का आग्रह है। रचना ही तो है जिसकी यात्रा अनंत तक जा सकती है मनुष्य की नहीं। बहरहाल, बाजार की जिद तो यह है कि वह रचानकार या कृतिकार का नाम इसलिए बड़ा करना चाहता है ताकि वह कृति के साथ साथ कृतिकार के नाम का भी विपणन कर सके। इस प्रक्रिया में न कृति की प्रतिष्ठा है और न कृतिकार की, बल्कि दोनों बाजार के आगे विनम्र दिखाई देते हैं।

हिंदी साहित्य में बाजार की घुसपैठ की विद्रूपताएँ अब दिखाई देने लगी हैं। आशंका इसी बात की है कि यह घुसपैठ अंततः साहित्य को भी बाजार के सेवक के रूप में प्रतिस्थापित कर दे।

• • •

बलवंत जेऊरकर का निधन एक चौंकाने और डराने वाली घटना है। बलवंत भाई को पहली बार मैंने तब जाना जब उनकी बहुत सुंदर वर्तनी का संदेश बनास को भेजे एक मनीऑर्डर के साथ मिला। फिर उनसे बातचीत भी होने लगी। मुझे मालूम हुआ कि वे इतने बढ़िया अनुवादक हैं कि साहित्य अकादेमी अपने पुरस्कृत हिंदी कविता संग्रहों का अनुवाद उनसे करवा चुकी है। पेशे से हिन्दी के शिक्षक बलवंत जी सांगली में कालेज में पढ़ाते थे। वे हिंदी साहित्य के भी ऐसे प्रेमी थे कि अक्सर कठिन और दुर्लभ हो चुकी पुस्तकों की मांग करते और फोटोकॉपी मंगवाते। मेरे मित्र अभिनंदन ने उन्हें केदारनाथ सिंह के पत्रों की दुर्लभ हो चुकी किताब की फोटोकॉपी भिजवाई थी। पुस्तक मेले और एकाध किसी अन्य आयोजन में उनसे भेंट भी हुई। उनसे यह इसरार भी करता रहा कि मराठी के श्रेष्ठ कथेतर साहित्य को हिंदी में लाने का कोई रास्ता बनाएँ। बच्चों की एक किताब का उन्होंने हिंदी से मराठी में अनुवाद करना चाहा, लेकिन लेखक प्रकाशक की अनुमति का झंझट आ गया। उन्होंने बताया था कि उनकी बिटिया इसका अनुवाद कर रही है। आखिर उनकी प्रकाशक से बात हुई और बहुत सुंदर छपाई में वह किताब आई। पिछले माह पता चला कि हृदयाघात से उनका आकस्मिक निधन हो गया है। वे घर में अकेले थे और जब मोबाइल लगातार अनुत्तरित रहा तब दरवाजा तोड़ कर घर खोला गया। एक प्रतिभाशाली अनुवादक और समर्पित शिक्षक का अल्पायु में औचक जाना बहुत खिन्न करने वाला है। हार्दिक शोक।

विश्व पुस्तक मेले के आसपास आलोचक वीरेंद्र यादव का आकस्मिक निधन भी हतप्रभ करने वाला था। साहित्य और विचार के मुश्किल दिनों में वे अपनी प्रतिज्ञाओं के साथ डटे हुए योद्धा की तरह हमेशा याद किये जाएँगे।

सिने गायिका आशा भोंसले, पंडवानी गायिका तीजन बाई, कवि और संस्कृति के मनीषी विद्वान मूलचंद्र पाठक, कथाकार मधुसूदन आनंद, आलोचक और शिक्षक राजेंद्र कुमार भी इस अवधि में हमारा साथ छोड़ गए। सबको विनम्र श्रद्धांजलि।

• • •

संतोष की बात है कि जन्म शताब्दी वर्ष में कृष्णा सोबती जी पर इस अंक में भी एक सुदीर्घ आलेख जा रहा है जो 'बनास जन' के आग्रह पर अनामिका जी ने लिखा है। कृष्णा सोबती के अवदान के रेखांकन के साथ यह आलेख समकालीन स्त्री लेखन पर भी गहरा अध्ययन प्रस्तुत करता है। अंक पर पाठकों की सम्मति की प्रतीक्षा रहेगी।

पल्लव